गोरख पांडेय की कविता

समझदारों का गीत

हवा का रुख़ कैसा है, हम समझते हैं
हम उसे पीठ क्यों दे देते हैं, हम समझते हैं
हम समझते हैं ख़ून का मतलब
पैसे की क़ीमत हम समझते हैं
क्या है विपक्ष में विपक्ष में क्या है, हम समझते हैं
हम इतना समझते हैं
कि समझने से डरते हैं और चुप रहते हैं

चुप्पी का मतलब भी हम समझते हैं
बोलते हैं तो सोच-समझकर बोलते हैं हम
हम बोलने की आज़ादी का
मतलब समझते हैं
टुटपुंजिया नौकरियों के लिए
आज़ादी बेचने का मतलब हम समझते हैं
मगर हम क्या कर सकते हैं
अगर बेरोज़गारी अन्याय से
तेज़ दर से बढ़ रही हो
हम आज़ादी और बेरोज़गारी दोनों के
ख़तरे समझते हैं
हम ख़तरों से बाल-बाल बच जाते हैं
हम समझते हैं
हम क्यों बच जाते हैं, यह भी हम समझते हैं

हम ईश्वर से दुखी रहते हैं अगर वह
सिर्फ़ कल्पना नहीं है
हम सरकार से दुखी रहते हैं
कि समझती क्यों नहीं
हम जनता से दुखी रहते हैं
कि भेड़ियाधसान होती है

हम सारी दुनिया के दुख से दुखी रहते हैं
हम समझते हैं
मगर हम कितना दुखी रहते हैं यह भी
हम समझते हैं
यहां विरोध ही वाजिब क़दम है
हम समझते हैं
हम क़दम-क़दम पर समझौता करते हैं
हमत समझते हैं
हम समझौते के लिए तर्क गढ़ते हैं
हर तर्क को गोल-मटोल भाषा में
पेश करते हैं, हम समझते हैं
हम इस गोल-मटोल भाषा का तर्क भी
समझते हैं

वैसे हम अपने को किसी से कम
नहीं समझते हैं
हम स्याह को सफ़ेद और
सफ़ेद को स्याह कर सकते हैं
हम चाय की प्यालियों में
तूफ़ान खड़ा कर सकते हैं
करने को तो हम क्रांति भी कर सकते हैं
अगर सरकार कमज़ोर हो
और जनता समझदार
लेकिन हम समझते हैं
कि हम कुछ नहीं कर सकते हैं
हम क्यों नहीं कुछ कर सकते हैं
यह भी हम समझते हैं।

पाठक मंच से पाठक की अपील

मज़दूर मोर्चा के पाठकों का एक पाठक के रूप में जोशपूर्वक अभिनंदन करता हूं। मुझे मज़दूर मोर्चा के माध्यम से आप लोगों के मज़दूर मोर्चा के बारे में विचार जानने का अवसर मिला। लगभग सभी पाठकों ने पाठक मंच कॉलम में मज़दूर मोर्चा के प्रति बेबाक प्रतिक्रिया दी है। शत-प्रतिशत पाठकों ने मज़दूर मोर्चा द्वारा उठाये गये तमाम मुद्दों की बहुत प्रशंसा की है। मेरी नज़र में आप सम्मानीय एवं जागरूक नागरिक हैं।

माननीय पाठकों, मैं भी मज़दूर मोर्चा का एक पाठक हूं। इस नाते अपना दर्द, अपनी टीस आपके सम्मुख रखना चाहता हूं। आशा है, आप मेरे विचारों से सहमत होंगे। मज़दूर मोर्चा एक सामान्य समाचार पत्र नहीं है, बल्कि यह न रुकने वाली एक मुहिम है, मज़दूर मोर्चा एक विचार है, मज़दूर मोर्चा एक आंदोलन है तथा वर्तमान व्यवस्था पर रोज लगने वाला एक तमाचा है। मोर्चा सच का प्रतीक है, सच का आइना है। मोर्चा निडर एवं निर्भीक है तथा यह यह इस शोषक व्यवस्था के खिलाफ़ एक जंग है।

मित्रो, इस देश में हज़ारों छोटे-बड़े समाचार-पत्र छपते हैं, परंतु पूरे सच को लिखने का साहस किसी माई के लाल में नहीं है जो मज़दूर मोर्चा में है। भ्रष्टाचारियों, भू-माफ़िया, भ्रष्ट प्रशासक चाहे वे किसी विभाग के हों, भ्रष्ट न्याय व्यवस्था आदि को पूरी तरह नंगा करने का काम मज़दूर मोर्चा लगभग 25 वर्षों से कर रहा है।

मैं मज़दूर मोर्चा के मुख्य संपादक श्री सतीश कुमार को लगभग 30 वर्षों से जानता हूं। यहां यह बताना बहुत आवश्यक है कि साथी सतीश कुमार को मज़दूर मोर्चा में कड़वा सच लिखने के कारण बहुत कष्ट उठाने पड़े। इन्हें झूठे मुकदमों में फंसाया गया। यहां तक कि इनको काफ़ी समय जेल में रहना पड़ा। परंतु साथी सतीश कुमार ने कभी हार नहीं मानी तथा झूठे मुकदमों में फंसाने वालों को मुंह की खानी पड़ी।

प्रिय पाठकों, मज़दूर मोर्चा में कभी-कभी बहुत दुर्लभ जानकारियां प्रकाशित होती हैं। कुछ समय से मैं मज़दूर मोर्चा की प्रतियां संजो कर रखता हूं, क्योंकि मैं इस पत्र को रद्दी नहीं समझता। मैं मज़दूर मोर्चा के मुहिम से पूरी तरह सहमत हूं।

प्रिय मित्रो, जब हम मज़दूर मोर्चा की मुहिम से पूरी तरह अवगत हो चुके हैं तो हमें भी एक मंच पर इकट्ठा होना चाहिए। मैंने मज़दूर मोर्चा के विभिन्न अंकों में आपके विचार पढ़े, इसलिए मैं अपना विचार आपके सामने रख रहा हूं कि हमें भी मज़दूर मोर्चा का एक सहायक संगठन बनाना चाहिए ताकि हम समान विचारधारा के लोग एक प्लेटफॉर्म पर इकट्ठा हो कर इस आंदोलन को और शक्तिशाली बना सकें। आज लुटेरे लूट रहे हैं और हम व्यक्तिगत तौर पर कहीं न कहीं लुट रहे हैं। आज भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर है। आज लालफीताशाही तथा भ्रष्ट राजनीतिज्ञों का संयुक्त भ्रष्टाचार जगजाहिर है। हमारे पास मज़दूर मोर्चा एक हथियार है जिसका हमें अधिक से अधिक प्रयोग एवं प्रसार करना चाहिए।

मज़दूर मोर्चा के 16 से 31 मार्च 2010 के अंक में एक लेख छपा है जिसका शीर्षक है 'राजनीति में विकल्पहीनता का दौर।' आज लगभग पूरा देश भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया है। भ्रष्ट राजनेता किसी कीमत पर सत्ता में बने रहना चाहते हैं। सत्ता में बने रहने के लिए वोट चाहिए। वोट प्राप्त करने के लिए धनबल, भुजबल, जातिवाद, प्रांतवाद, भाषावाद तथा धर्म-उन्माद का सहारा लेने में इन्हें कोई गुरेज नहीं है। इन बेशर्मों का एकमात्र उद्देश्य है सत्ता में बने रहना। आज़ादी के 62 वर्षों के बाद भी करोड़ों लोग ग़रीबी रेखा से नीचे का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। करोड़ों बच्चे घोर ग़रीबी के कारण स्कूल नहीं जा पाते हैं। करोड़ों लोगों को स्वच्छ पेयजल नसीब नहीं होता है। कहने का अभिप्राय है अशिक्षा, भूख, भय, बेरोज़गारी तथा असंगत न्याय व्यवस्था के कारण करोड़ों लोग परेशान हैं, क्योंकि ये लोग बंटे हुए हैं जिसका सीधा लाभ भ्रष्ट राजनेताओं तथा भ्रष्ट प्रशासकों को हो रहा है। अब सवाल है, करना क्या चाहिए? हम सब पाठकों को तीन मास में एक बैठक बुलानी चाहिए तथा मज़दूर मोर्चा का एक सहायक संगठन बनाना चाहिए। मोर्चा को सिर्फ़ पढ़ने और प्रशंसा करने से काम नहीं चलने वाला है। यह वक्त मिल कर काम करने का है। बड़े अफसोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि मज़दूर मोर्चा को अब तक हज़ारों लोगों ने पढ़ा होगा, परंतु अब तक कम से कम 100 व्यक्ति तो ऐसे होते जो एक साथ खड़े हो कर इस मुहिम को आगे बढ़ाते। सतीश जी तो सालों से अपना काम कर रहे हैं। मोर्चा में अपनी प्रतिक्रिया दे कर ही काम चलने वाला नहीं है। इसके लिए ठोस काम करने की आवश्यकता है। हमारी यह सोच ग़लत है कि हमें कुछ न करना पड़े, दूरा ही सब कुछ कर दे। हमें इस सोच को सुधारना होगा। इसलिए पाठकों आप से मेरी प्रार्थना है कि हम-आप मिल कर मोर्चा की मुहिम को आगे बढ़ायें। अपनी सोच को सकारात्मक बनायें तथा आशावादी बनें।

- बीरम सिंह, पूर्व प्रधान एस्कार्ट यूनियन
160 ढाका, किंग्वजे कैंप
दिल्ली-110009
फ़ोन नंबर-27606164, मोबाइल नंबर- 9873346164

पेज 1 का शेष भाग

हरियाणा पुलिस न पकड़ सकी जिस मनमोहन सिंह को जम्मू पुलिस ने धर दबोचा

इसके बाद यह ठग वापस दिल्ली के लिए खाना हुआ तो फ़िर उसी तरह आगे से आगे पुलिस जिप्सियां इसको पायलेट करने को तैयार मिली। रात्रि करीब 10 बजे यह ठग सेक्टर-21ए स्थित एक कोठी पर पहुंचा तो एक घंटा पहले पुलिस राइडर उस कोठी की निशानदेही करने पहुंचे और तब वे जाकर पुलिस जिप्सी को रास्ता दिखाते हुए लेकर आए। रात के 12 बजे, जब तक यह ठग वहां रहा पुलिस जिप्सी व राइडर वहां तैनात रहे और उसको दिल्ली सीमा में प्रवेश करा कर वापिस लौट आए। यहां काबिले गौर बात यह है कि जब यह ठग दिल्ली से आता है या वापिस जाता है तो कोई पुलिस जिप्सी इसको पायलट नहीं करती और न ही इसके फतह नगर वाले, मात्र 100 गज़ पर बने मकान पर किसी प्रकार की सुरक्षा व्यवस्था है। यह ठग केवल अन्य राज्यों की पुलिस को ही बेवकूफ़ बना कर अपने शिकार फ़ांसता है।

लालबत्ती लगी सफ़ेद एम्बेसेडर कार और इस पुलिसिया ताम झाम की आड़ में इसने किन लोगों का कैसे-कैसे शिकार किया इसकी पूरी जानकारी तो उपलब्ध नहीं हो पाई लेकिन फ़रीदाबाद के एक व्यवसायी को ज़रूर 5 लाख का चूना यह ठग लगा गया।

इस सारे प्रकरण को 'मज़दूर मोर्चा' के 16-28 फरवरी, 2009 अंक में न केवल प्रकाशित किया बल्कि स्थानीय पुलिस को इस बाबत लिखकर भी दिया, जिस पर थाना सेंट्रल का एक थानेदार दिल्ली जाकर मनमोहन सिंह की जांच पड़ताल भी कर के आया। थानेदार ने अपनी जांच में मनमोहन सिंह को ठीक तथा उसके विरुद्ध दी गई दरखास्त को ग़लत बता दिया। मज़े की बात यह है कि उस थानेदार की गलत रिपोर्ट पर एसएचओ, डीएसपी व एसपी ने भी घुघी मार कर अपने कर्तव्य की इति श्री कर ली। दरअसल जब इस बाबत दरखास्त दी गई थी उस वक्त यहां श्रीकांत जाघव एसपी हुआ करते थे। उन्होंने अपने स्तर पर जांच शुरू करके इस ठग गिरोह के कुछ सुराग जुटा लिए थे, लेकिन तुरंत ही उनका तबादला होने के बाद मामले की लीपापोती का काम शुरू हो गया।

सुरक्षा के नाम पर लंबी चौड़ी हरियाणा पुलिस व सीआईडी का कर्तव्य बनता है कि वे स्वतः इस तरह के ठगों को पकड़ें, लेकिन जहां पुलिस खुद ही ठग्गी का शिकार हो रही हो वह दूसरों को क्या बचाएगी?

इतना ही नहीं, खुद पकड़ना तो दूर की बात दूसरों द्वारा चेताने के बावजूद भी न पकड़ पाना तो काहिली की इन्तहां है। यह काहिली कोई स्थानीय अथवा छोटे मोटे स्तर की नहीं है, यह तो पुलिस विभाग के शीर्ष स्तर की है। अख़बार में प्रकाशित होने के साथ-साथ शीर्ष स्तर तक इस बाबत लिखित शिकायतें भेजी गई थीं, लेकिन किस को इतनी फुर्सत है जो इस तरह के, बिना कमाई वाले कामों पर अपनी उर्जा व समय गवाएं।

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक समाचार पत्र

फरीदाबाद के पाठकों के लिए मजदूर मोर्चा अब हॉकरों के माध्यम से उपलब्ध है। जो भी हॉकर आपके यहां अखबार देने आता है, वह मांगने पर मज़दूर मोर्चा अवश्य देगा। डाक से अखबार पहुंचे या नहीं, इसका कोई ठिकाना न होने के कारण हमने यह नई व्यवस्था की है। अखबार मिलने में किसी तरह की समस्या होने पर हमारे प्रसार प्रबंधक से निम्न मोबाइल नंबर पर संपर्क करें :

दीक्षित न्यूज़ एजेंसी 9811159238

अब बल्लभगढ़ व पलवल के पाठक भी अपने हॉकर से मजदूर मोर्चा प्राप्त कर सकते हैं। किसी कठिनाई की स्थिति में संपर्क करें :

भूटानी न्यूज़ एजेंसी

मीनार गेट, पलवल। मोब.: 09354112741, 09728382049